मिट्टी की सोंधी अनुभूतियाँ

रमेश कुमार सिंह

93. जाड़े की रात

जाड़े की यह रात सुहानी
हो गई सदियों बात पुरानी
थर-थर करती बुढ़िया नानी
फिर भी भरती ठंढा पानी
राजा के घर नई रजाई
मंत्री ने भी काम बनाई
चमचों की मत पूछो भाई
खाये कितने दूध मलाई
जाड़े में जनता रोती है
पेड़ों के नीचे सोती है
उसको कपड़ा है न रोटी है
बस तन पर एक लंगोटी है
हर साल ठंढ तो पड़ती है
निर्धन की आह निकलती है
पर कौन किसकी सुनता है
बस अपनी धुन में रहता है

■

87. माँ भारती

मस्तक है कश्मीर माता का
चरण धाम रामेश्वर है
माँ का दायाँ हाथ द्वारका
कोहिमा बायाँ हाथ है
यहीं हमारा जन्म हुआ है
खेल कूद सब बड़े हुये
खाते-पीते पढ़ते लिखते
स्वाभिमान से खड़े हुये
छल-छदम् से दूर रहकर
दया प्रेम से रहते हैं
भोले भाले श्याम रंग हम
माँ भारती की संतान हैं
चन्दा मामा कहते कहते
जा मामा से मिल आते हैं
गंगा-यमुना-सरस्वती में
हम गोता खूब लगाते हैं
आतंकी खानों को सैनिक
अब इधर नहीं आने देंगे
अपने ताकतवर हाथों से
. ईंट से ईंट बजा देंगे।

■

97. जंगलराज

जंगल में अनहोनी पाया
घूम रहे सारे चौपाया
पेड़ों पर चढ़ना बाघ बतावें
बन्दर और लंगूरों को
चूहे चीता को दौड़ सिखाते
गदहे बिल्ली मौसी को
कैसे देना होगा बाँग
सूअर सिखावें मुर्गे को
जिम्मा दादुर ले रखे हैं
चिड़ियाँ कैसे उड़ेगी
इनसब जंगलवासी के
पालक उल्लू महाराज जी
देखो यही विधान मान
दुनिया करती पूरा काम

■

13. आजादी

पूर्वजों ने आजादी की जंग जीती थी किनके लिए?
जो कार्यालयों में आते ही नहीं
यदि आते हैं तो ऊँघते हैं
या पैसे कहाँ से पाऊँ
लोगों के पॉकेट सूँघते हैं
उनके लिए?
पूर्वजों ने ....
जो नियुक्ति में रिश्वत लेते हैं
जो किश्तों में रूपये ऐंठ लेते हैं।
बाढ़ पीड़ितों के हक मार लेते हैं
या अकाल पीड़ितों के बुतात खा लेते हैं
उनके लिए?
पूर्वजों ने ....
जो खुद तो गलत करते हैं मगर
दूसरों को सही करने को कहते हैं
राष्ट्रीय पथ को भी हेलीपैड बना
हमदर्दी का दिखावा करते हैं
उनके लिए?
पूर्वजों ने ....
जो विभिन्न घोटालों के सरदार बन बैठे हैं।
या नरमुण्डों से रोजगार पाते हैं

साम्प्रदायिकता का बीज बोते हैं
उनके लिए?
पूर्वजों ने ....
जो आज इस दल, कल उस दल
जीवन भर केवल दल-बदल या जनबल को छोड़
धनबल से चुनाव लड़ते हैं।
उनके लिए?
पूर्वजों ने ....
जो किसान की कमाई का
संपूर्ण भाग स्वयं खा जाते हैं।
या सब्जी वालों की सब्जी छीन
खुद मालिक बन बेचते हैं
उनके लिए?
पूर्वजों ने ....
जो वाहन मालिक का लठैत बन
स्वयं मालिक बन जाते हैं।
या कुछ पैसों के वास्ते
मालगाड़ी रोककर कोयला उतरवाते हैं
उनके लिए?
पूर्वजों ने ....
जो आतंकियों से मिल
देश को रोज टुकड़ों में बेचते हैं।
या अपनी ही बहुओं को
दहेज के लिए आग में डाल देते हैं
उनके लिए?
पूर्वजों ने ....
जो गरीबों की रक्षा के नाम पर

खुद भक्षक बन खाते हैं
गरीब रहे हमेशा गरीब
ऐसी योजनाएँ बनाते हैं
उनके लिए?
पूर्वजों ने ....
जो देश का पैसा विदेशें में
जमा कर ऐश करते हैं
या नंगे बदन, भूख से
सरे आम रोज मरते हैं
उनके लिए?
पूर्वजों ने आजादी की जंग जीती थी किन के लिए?

■